# तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

## 'जेंडर समानता की गाँधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां'

### 28-30 मार्च, 2019

वर्धा, 28 मार्च. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में 'जेंडर समानता की गाँधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रारंभ हुआ संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने और संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने की.महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गाँधी विचार परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस तीन दिवसीय संगोष्ठी की शुरुआत दीप प्रज्जवलन से हुई. वरिष्ठ चिन्तक प्रो. नंदकिशोर आचार्य, विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, कुलानुशासक प्रो.मनोज कुमार, गाँधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय, मध्य प्रदेश के महू स्थित ब्राउस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आशा शुक्ल एवं आईआईएएस शिमला की पूर्व अध्ययक्ष प्रो. चन्द्रकला पाडिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन किया. इसके उपरांत सभी अतिथियों को अंगवस्त्र, विश्वविद्यालय की डायरी-कैलंडर एवं पुष्प भेंट कर स्वागत किया गयाउद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि उम्मीद है कि महात्मा गाँधी एवं कस्तूरबा गाँधी के 150 वीं जयंती पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में जेंडर समानता की गाँधीवादी दृष्टि पर गहन चर्चा होगी और जेंडर समानता के विमर्श को नयी ऊँचाई प्राप्त होगी.

स्वागत वक्तव्य के पश्चात् भारत महोदय ने तीन दिवसीय संगोष्ठी की पूरी रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि विचार-विमर्श के जरिये हम अपनी समझ को तीक्ष्ण करेंगे और भविष्य के समाज निर्माण में योगदान करेंगे, ऐसी आकांक्षा है. संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में विषय के विभिन्न आयामों पर विशेषज्ञ वक्ता अपने ज्ञान व अनुभव साझा करेंगे. आगे उन्होंने कहा कि गाँधी के अहिंसा के विचार की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी.

बीज वक्तव्य देते हुए बीकानेर विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. चन्द्रकला पाडिया ने कहा कि गाँधी की स्त्रीवादी दृष्टि को नहीं समझने के कारण बहुत सारी भ्रांतियां होती हैं. इसे गंभीरतापूर्वक समग्रता में समझना जरुरी है. गांधीजी की विश्व दृष्टि को भी समझाने की आवश्यकता है, उनकी विश्व दृष्टि पश्चिम से आयातित नहीं है. हालाँकि गाँधी ने पश्चिम के भी बेहतर ज्ञान का स्वागत किया, उसे आत्मसात भी किया था. बावजूद इसके अपनी जमीन पर वे मजबूती से खड़े रहे थे. गाँधी जी को किसी स्थापित वैचारिक खांचे में बांटकर नहीं समझा जा सकता है. गाँधी की अपनी भिन्न दृष्टि रही है. वे पारस्परिकता, उच्चता व समन्वय की दृष्टि थी. गाँधी इस दृष्टि से स्त्री को देखते हैं. आज तक पुरुषोचित दृष्टि से ही स्त्री को देखा जाता रहा है. किंतु गाँधी की दृष्टि इससे पूरी तरह भिन्न थी.गांधी स्त्रियों के अधिकारों के मुद्दे पर किसी प्रकार का समझौता करना मंजूर नहीं था. वे स्त्री को पुरुष बनाने के बजाय स्त्री बनने पर ही ज़ोर देते थे. उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा में व्याप्त स्त्री दृष्टि पर विस्तृत चर्चा की. गाँधी स्त्री को पुरुष बनाने के बजाय अपने स्वत्व को पहचानने पर बल देते हैं. वे स्त्री को पति की गुलाम मानने से इंकार करते हैं. वे स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे का पूरक मानते हैं. अंत में उन्होंने कहा कि वर्त्तमान में जो व्यक्ति की परिभाषा है, उसे परिवर्तित करने की जरुरत है.

भीमराव आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू की कुलपति प्रो.आशा शुक्ला ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुएकहा कि वहां की स्त्रियों का शोषण आज भी विभिन्न रूपों में जारी है. उन्हें मनुष्य का दर्जा हासिल नहीं हो पाया है. बालिकाओं की आज भी देश के कुछ हिस्सों में खरीद-बिक्री हो रही है. स्त्रियों को देवी और दासी बनाने के बजाय मनुष्य का दर्जा प्राप्त होना आवश्यक है. उन्होंने कहा कि गाँधी के दर्शन में स्त्री का मानवीय स्वरूप प्राप्त होता है. गाँधी ने उस दौर में महिला नेतृत्व को सामने लाने में अहम योगदान किया, जब भारतीय समाज में ऐसा करना बहुत कठिन था. गाँधी मानते थे कि स्त्री का जन्म पुरुषों की क्रीडा के लिए नहीं हुआ है. आगे उन्होंने कहा कि गाँधी का दोहरा चेहरा और चरित्र नहीं था, हमें उनसे प्रेरणा लेने की जरूरत है. भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कि आज भी देश में बाल विवाह, यौन हिंसा, बालिका भ्रूण-हत्या, विधवा प्रथा, जाति प्रथा व्याप्त है. आज भी स्त्रियों को निजी स्वतंत्रता हासिल नहीं हुई है. अंत में उन्होंने कहा कि स्त्रियों को पुरुषों के खिलाफ नहीं बल्कि साथ चलने की जरुरत है. प्रकृति ने स्त्री-पुरुष को एक साथ ही बनाया है.

प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि मानव जीवन मूल्यों की साधना है. इसलिए भारतीय अथवा पश्चिमी दृष्टिकोण के बजाय मूल्यों को केंद्र में रखकर विचार किया जाना चाहिए. गाँधी एक अहिंसक समाज की कल्पना करते हैं. अहिंसा उनका केंद्रीय मूल्य है. गाँधी हिंसा के तमाम रूपों के प्रति सचेत हैं. ऐसी कोई भी चीज़ जिसका निवारण किया जा सकता है, वह यदि मानवीय सिद्धि में बाधा डालती है तो वह हिंसा है. सांस्कृतिक हिंसा

संरचनात्मक हिंसा को ही वैधता प्रदान करती है. महात्मा गाँधी के नेतृत्व के कारण स्त्रियां आज़ादी के आन्दोलन में बड़ी तादाद में शामिल हुई, जेल गई. गाँधी प्रत्येक मनुष्य की स्वतंत्रता को सबों की स्वतंत्रता की कसौटी मानते हैं. स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा नारीवाद का केंद्रीय प्रयोजन है. यह नारीवाद का केंद्रीय मूल्य है. गाँधी मानव जीवन को सत्य की साधना मानते हैं. अन्य के प्रति न्याय का आचरण ही नैतिक साधना है. न्याय का तात्पर्य है, शोषित वंचितों-पीड़ितों को न्याय मिले. ये बातें गांधी के दर्शन में दिखाई पड़ती है.

उन्होंने तुलसीदास को उल्लेखित करते हुए कहा कि तुलसीदास ने स्त्रियों के परिप्रेक्ष्य में "पारधीन सपने हूँ सुख नहीं" कहा था. हिंसा और हिंसा की टकराहट में उद्देश्य की जीत नहीं होती बल्कि हिंसा की है विजय होती है और उद्देश्य पीछे छूट जाता है. इसलिए अहिंसा ही उपयोगी मूल्य है. पुरुष और स्त्री के जीवन साधना के मूल्य अलग-अलग नहीं होते हैं. उन्होंने गाँधी को अध्यात्मिक नारीवादी करार दिया. गाँधी नारी के जीवन को पुरुष केन्द्रित नहीं होने की बात करते. वे स्त्रियों को आत्मनिर्भर होने की वकालत करते हैं ताकि स्त्रियों को स्वतंत्रता प्राप्त हो सके. गाँधी किसी भी ऐसी निर्योग्यता का विरोध करते हैं, जो नारी पर लागू की जाती है और पुरुष पर नहीं. गाँधी धर्मशास्त्रों को भी सम्पादित करने की बात करते हैं. शास्त्रों में जहाँ कहीं भी स्त्री विरोधी वक्तव्य हैं वे उसे निकाल दिए जाने तक की बात करते हैं. आगे उन्होंने कहा कि गाँधी विवाह को आत्मिक उत्कर्ष का माध्यम मानते हैं, न कि भोगविलास अथवा संतानोपत्ति का जरिया. गाँधी किसी भी नैतिक नियम के स्वेच्छा से पालन करने की बात करते हैं. स्वेच्छा से वरण किए गए नैतिक नियम ही व्यक्ति स्वतंत्रता का माध्यम हो सकता है. गाँधी प्रत्येक स्त्री की देह पर उस स्त्री के अधिकार की हिमायत करते हैं. वे बलात्कार से बचने हेतु हिंसा का आश्रय लेने के भी पक्षधर हैं. गाँधी जो अपेक्षा स्त्रियों से करते हैं वही अपेक्षा पुरुषों से भी करते हैं. इससे स्पष्ट है कि गाँधी मुकम्मल आध्यात्मिक नारीवादी हैं.

उद्घाटन सत्र के अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि संगोष्ठी का विषय वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर काफी महत्वपूर्ण है. स्त्री के बगैर मानव की कल्पना परिपूर्ण नहीं हो सकती है. सम्पूर्ण मनुष्य की कल्पना हमारा लक्ष्य होना चाहिए. स्त्री-पुरुष के बीच पूरी दुनिया में खा ई बढ़ती ही जा रही है. हर जगह स्त्रियों का शोषण व्याप्त रहा है. शिक्षा के प्रसार के बावजूद स्त्रियों पर अन्याय-शोषण का सिलसिला थमा नहीं है. गाँधी विकेन्द्रित समाज की बात करते हैं. वे कार्यों के साथ-साथ शक्ति के भी विकेंद्रीकरण की बात करते हैं. आगे उन्होंने कहा कि समाज और परिवार में स्त्रियों की भूमिका को प्रतिबंधित कर दिया गया है. यह उचित नहीं है, इस परंपरा के खण्डन की आवश्यकता है. जब तक कार्यों में बदलाव नहीं आएगा तब तक चिंतन में भी बदलाव नहीं आ सकता. आगे उन्होंने कहा कि स्त्री-पुरुष का भेद पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होने से तभी रुकेगा. उन्होंने सांसद-विधान सभाओं में स्त्रियों के समुचित प्रतिनिधित्व सुनिचित नहीं किए जाने के प्रति भी गंभीर चिंता जाहिर की उन्होंने कहा कि इस बिंदु पर सभी राजनितिक दलों से सवाल पूछे जाने की जरुरत है. स्त्रियां तभी सामर्थ्यवान होंगी जब उसे सभी क्षेत्रों में बराबरी के अवसर की गारंटी होगी. गाँधी ने एक जीवित और सचेत समाज की कल्पना की थी. गाँधी आवश्यकताओं को सीमित किए जाने की बात करते हैं. किंतु आज हर चीज़ को बाज़ार नियंत्रित कर रहा है. यहाँ चिंताजनक स्थिति हैं. जेंडर समानता के परिप्रेक्ष्य में इन चुनौतियों पर विचार किए जाने की ज़रूरत है. आज विचारपूर्वक आचरण की सबसे ज्यादा आवश्यकता है. बाह्य शक्तियों के

नियंत्रण में जीवनशैली का चला जाना अत्यंत ही खतरनाक है गाँधी ने स्व-नियंत्रण की बात की थी. जीवन की वास्तविक सम्पन्नता और समृद्धि इसी रास्ते से मुमकिन है. उद्घाटन सत्र की समाप्ति स्त्री अध्ययन विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. अवंतिका शुक्ला के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ. संगोष्ठी में देश के दर्जनों विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं शोधार्थियों के साथ-साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शोधार्थी बतौर प्रतिभागी उपस्थित थे.

**रिपोर्टिंग टीम: डॉ. मुकेश कुमार, रक्षा महाजन, औरंगजेब खान एवं शिवानी अग्रवाल.**

# तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन

वर्धा, जिला संवादक

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि–सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रारंभ हुआ. संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की. संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गांधी विचार परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस तीन दिवसीय संगोष्ठी की शुरुआत दीप प्र%जवलन से हुई. वरिष्ठचिन्तक प्रो. नंदकिशोर आचार्य, प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, प्रो.मनोज कुमार, भरत महोदय, प्रो. आशाशुक्ल एवं आईआईएएस शिमला की पूर्व अध्ययक्ष प्रो. चन्द्रकला पाडिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन किया. इसके उपरांत सभी अतिथियों को अंगवस्त्र, विश्व विद्यालय की डायरी–कैलेंडर एवं पुष्प भेंट कर स्वागत किया गया. उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि उम्मीद है कि महात्मा गांधी एवं कस्तूरबा गांधी के 150वीं जयंती पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि पर गहन चर्चा होगी और जेंडर समानता के विमर्श को नयी ऊंचाई प्राप्त होगी. स्वागत वक्तव्य के पश्चात भारत महोदय ने तीन दिवसीय संगोष्ठी की पूरी रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि विचार–विमर्श के जरिये हम अपनी समझ को तीक्ष्ण करेंगे और भविष्य के समाज निर्माण में योगदान करेंगे, ऐसी आकांक्षा है. संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में विषय के विभिन्न आयामों पर विशेषज्ञ वक्ता अपने ज्ञान व अनुभव साझा करेंगे. भीमराव आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू की कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि वहां की स्त्रियों का शोषण आज भी विभिन्न रूपों में जारी है. उन्हें मनुष्य का दर्जा हासिल नहीं हो पाया है.

किया जाएगा.

जारी है.

## 3 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी उद्घाटित

# हर जगह महिलाओं का शोषण : मिश्र

**वर्धा (का).** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रारंभ हुआ. संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की. प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने कहा कि उम्मीद है कि महात्मा गांधी एवं कस्तूरबा गांधी के 150वीं जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि पर गहन चर्चा होगी और जेंडर समानता के विमर्श को नयी ऊंचाई प्राप्त होगी. भारत महोदय ने कहा कि विचार-विमर्श के जरिये हम अपनी समझ को तीक्ष्ण करेंगे और भविष्य के समाज निर्माण में योगदान करेंगे, ऐसी आकांक्षा है. अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि संगोष्ठी का विषय वैचारिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर काफी महत्वपूर्ण है.

स्त्री के बगैर मानव की कल्पना परिपूर्ण नहीं हो सकती है. सम्पूर्ण मनुष्य की कल्पना हमारा लक्ष्य होना चाहिए. स्त्री-पुरुष के बीच पूरी दुनिया में खाई बढ़ती ही जा रही है. हर जगह स्त्रियों का शोषण व्याप्त रहा है. संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डा. सुप्रिया पाठक ने की. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गांधी विचार परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित संगोष्ठी की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई. वरिष्ठ चिन्तक प्रो. नंदकिशोर आचार्य, विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, कुलानुशासक प्रो.मनोज कुमार, गांधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय, मध्य प्रदेश के महू स्थित ब्राउस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आशा शुक्ल एवं आईआईएएस शिमला की पूर्व अध्यक्ष प्रो. चन्द्रकला पाडिया उपस्थित थे.

# 'संस्कृति और सारस्वत का आरंभ भारत भूमि से'

### प्रसिद्ध गांधीवादी प्रवीणा बेन देसाई का कथन

**ब्यूरो | वर्धा.**

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गांधी विचार परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में दूसरे दिन 'जेंडर समानता के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास' विषय पर केन्द्रित चर्चा सत्र की शुरुआत हुई। सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध गांधीवादी प्रवीणा बेन देसाई ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रवीणा बेन देसाई ने कहा कि संस्कृति और सारस्वत का आरंभ भारत भूमि से हुआ है। भारतीय परंपरा के उच्च मूल्यों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यहां दोष दर्शन की अपेक्षा गुण दर्शन पर विशेष जोर दिया गया है. महापुरुषों पर टीका-टिप्पणी की जगह गुण ग्रहण करने की आवश्यकता है। इस देश के आध्यात्म के सूर्य का दर्शन गांधी-विनोबा में होता है। सत्र का संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया। सत्र में वक्ता के रूप में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर की डॉ.भारती शुक्ला, महात्मा गाँधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल एवं धर्मपाल शोध पीठ, भोपाल की डॉ. कुसुमलता केडिया मौजूद थीं। आभार ज्ञापन डॉ.सुप्रिया पाठक ने किया। संगोष्ठी में देश के दर्जनों विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं शोधार्थियों बतौर प्रतिभागी उपस्थित थे।

# महापुरुषों से गुण ग्रहण करने की आवश्यकता

## हिंदी विवि में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन

वर्धा। 30 मार्च । लोस

संस्कृति और सारस्वत का आरंभ भारत की भूमि से हुआ है. भारत में दोष दर्शन की अपेक्षा गुण दर्शन पर विशेष जोर दिया गया है. महापुरुषों की टीका-टिप्पणी के बजाय उनसे गुण ग्रहण करने की आवश्यकता है. गांधी-विनोद इन दोनों महापुरुषों ने निर्भिक और जमीनी स्तर पर काम करने वाली स्त्री नेतृत्व तैयार किया था. यह विचार प्रसिद्ध गांधीवादी प्रवीणा बेन देसाई ने व्यक्त किए.

वे महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गांधी विचार परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रही थीं. 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन 'जेंडर समानता के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास' विषय पर प्रवीणा बेन देसाई ने अध्यक्षीय भाषण दिया. सत्र में वक्ता के रूप में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर की डॉ. भारती शुक्ला, हिंदी विश्वविद्यालय की अकादमिक संयोजक शोभा पालीवाल एवं धर्मपाल शोध पीठ, भोपाल की डॉ. कुसुमलता केडिया मौजूद थीं.

कार्यक्रम में मार्गदर्शन करतीं प्रवीणा बेन देसाई तथा मंच पर शोभा पालीवाल व अन्य.

डॉ. भारती शुक्ला ने कहा कि जमीनी स्तर पर भारत में स्त्रियों के पक्ष में ढेर सारे आंदोलन चल रहे हैं. स्त्रियों के मुद्दे पर संघर्ष की डगर काफी कठिन है. स्त्रियों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे वे सही वक्त पर अपने को अभिव्यक्त करना सीख सकें. उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर लैंगिक समानता के लिए स्त्रियों को जाति-धर्म के आर-पार लामबंद होना होगा.

डॉ. कुसुमलता केडिया कहा कि समकालीन स्त्री की बौद्धिक छवि को समझने की जरूरत है. आज यूरो-क्रिश्चियन चिंतन का ही ज्यादा प्रभाव है. समकालीन स्त्री को घर की रानी बनना मंजूर नहीं है. डॉ. शोभा पालीवाल ने कहा कि गांधी कस्तूरबा के जीवन संघर्ष से हमें काफी प्रेरणा मिलती है. स्त्रियों को कस्तूरबा से सिखने की जरूरत है. आभार प्रदर्शन डॉ.सुप्रिया पाठक ने किया.

लोकमत समाचार

www.lokmatnews.in | epaper.lokmat.com/lokmatsamachar

विदर्भ

# गांधी की स्त्रीवादी दृष्टि को गंभीरता से समझना जरूरी

## हिंदी विवि में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में चंद्रकला पांडिया ने कहा

वर्धा। 29 मार्च । लोस

गांधी की स्त्रीवादी दृष्टि को नहीं समझने के कारण बहुत सारी भ्रांतियां निर्माण होती है. इसे गंभीरतापूर्वक समझना जरूरी है. गांधीजी की विश्व दृष्टि को भी समझने की आवश्यकता है. उनकी विश्व दृष्टि पश्चिम से आयातित नहीं है. हालांकि गांधीजी ने पश्चिम के भी बेहतर ज्ञान का स्वागत किया, उसे आत्मसात भी किया था. बावजूद इसके अपनी जमीन पर वे मजबूती से खड़े रहे. आज तक पुरुषोचित दृष्टि से ही स्त्री को देखा जाता रहा है, किंतु गांधी की दृष्टि इससे पूरी तरह भिन्न थी. यह विचार इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज शिमला (आईआईएएस) की पूर्व अध्यक्ष प्रो. चंद्रकला पांडिया ने व्यक्त किए.

वे महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम में बोल रही थीं. संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की. संगोष्ठी की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई. वरिष्ठ चिंतक प्रो. नंदकिशोर आचार्य, विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, कुलानुशासक प्रो.मनोज कुमार, गांधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय, मध्यप्रदेश के महू स्थित ब्राउस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आशा शुक्ल एवं संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन किया.

हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते प्रो. चंद्रकला पांडिया, प्रो.आशा शुक्ला, प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी.

प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने कहा कि उम्मीद है कि महात्मा गांधी एवं कस्तूरबा गांधी की 150 वीं जयंती पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि पर गहन चर्चा होगी और जेंडर समानता के विमर्श को नयी ऊंचाई प्राप्त होगी. प्रो.आशा शुक्ला ने कहा कि स्त्रियों का शोषण आज भी विभिन्न रूपों में जारी है. उन्हें मनुष्य का दर्जा हासिल नहीं हो पाया है. प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि मानव जीवन मूल्यों की साधना है, इसलिए भारतीय अथवा पश्चिमी दृष्टिकोण के बजाय मूल्यों को केंद्रित कर विचार किया जाना चाहिए.

उद्घाटन सत्र के अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि संगोष्ठी का विषय वैचारिक और व्यवहारिक दोनों स्तरों पर काफी महत्वपूर्ण है. स्त्री के बगैर मानव की कल्पना परिपूर्ण नहीं हो सकती. स्त्री-पुरुष के बीच पूरी दुनिया में खाई बढ़ती जा रही है. समाज और परिवार में स्त्रियों की भूमिका को प्रतिबंधित कर दिया गया है. यह उचित नहीं है. इस परंपरा के खंडन की आवश्यकता है. आभार प्राध्यापक अवंतिका शुक्ला ने माना. संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया. स्वागत वक्तव्य के पश्चात भारत महोदय ने तीन दिवसीय संगोष्ठी की पूरी रूपरेखा प्रस्तुत की.

city भास्कर
दैनिक भास्कर
bhaskarhindi.com
नागपुर. शनिवार, 30 मार्च 2019
16

# तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन

ब्यूरो | वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में 'जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि : सामर्थ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रारंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो. गिरिश्वर मिश्र ने की। संचालन डॉ. सुप्रिया पाठक ने की।इस तीन दिवसीय संगोष्ठी की शुरुआत दीप प्रज्जवलन से हुई. वरिष्ठ चिन्तक प्रो. नंदकिशोर आचार्य, विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, कुलानुशासक प्रो.मनोज कुमार, गांधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय, मध्य प्रदेश के महू स्थित ब्राउस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आशा शुक्ल एवं आईआईएएस शिमला की पूर्व अध्ययक्ष प्रो. चन्द्रकला पाडिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन किया.

उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। स्वागत वक्तव्य के पश्चात् भारत महोदय ने तीन दिवसीय संगोष्ठी की पूरी रूपरेखा प्रस्तुत की। इस संगोष्ठी में अनेक मान्यवरों ने अपने विचार रखे।